मैं कवयित्री नहीं हूं

क्यू लिखती हूं मैं कुछ पंक्तिया
स्वयं से घबरा कर या विवश होकर
या अपना कमजोर पक्ष छिपाने के लिए
कारण जो कुछ भी हो।

मैं कवयित्री नहीं हूं क्योंकि
मैं समुद्र की इठलाती लहरों पर नही लिखती
उगते सूरज, खिली धूप, ढली सुहावनी शाम,
शांत जल, खामोशी चाँद, उघते तारों पर नहीं लिखती।

मैं कवयित्री नहीं हूं क्योंकि
मै फूलों की मुस्कराहट, उनकी महकती खुशबू
उनके रंगीन रंगों पर नही लिखती

मैं कवि नहीं हूं क्योंकि मैं उमंगों पर, उत्साह पर,
मानवीय क्षमता पर, कर्मशक्ति पर, उल्लास व हर्ष पर नहीं लिखती।
मैं कवयित्री नहीं हूं क्योंकि
मैं लिखती हूं मात्र डूबते सूरज पर
थकी सी शाम पर, छिपे चाँद पर
किनारों की चट्टानों से टकराकर
वापिस हतोत्साहित सी लहरों पर।
मैं कवयित्री नही हूं क्योंकि मैं लिखती हूं मात्र
कांटों के सम्वेदन व उनके लहू से सम्बन्ध पर

मैं कवयित्री नही हूं क्योंकि मैं लिखती हूं
असफलता पर, मानवीय क्षमता की सीमा निर्धारण पर,
उसकी विफलता पर, दुख और विवशता पर।

परन्तु तथ्य मेरा कवयित्री होने का नहीं है
तथ्य है इन सभी ऋणात्मक पक्ष होने पर ही
धनात्मक पक्ष का औचित्य है अन्यथा
अर्थहीन स्वयं में।

कु. हन्सी, "अवर श्रेणी लिपिक"